# प्राचीन ज्ञान परंपरा और हिंदी साहित्य (जैन, सिद्ध, नाथ, रासो साहित्य)

साहिल कुमार

चतुर्थ सेमेस्टर बीबीए छात्र, गिब्स बिजनेस स्कूल, बंगलुरू.

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.15796017

## ABSTRACT:

यह आलेख भारतीय ज्ञान परंपरा में हिंदी साहित्य की प्रारंभिक भूमिका पर प्रकाश डालता है, विशेषकर जैन, सिद्ध, नाथ और रासो साहित्य के माध्यम से। जैन साहित्य ने अहिंसा और आत्मसंयम पर बल दिया, जबकि सिद्ध साहित्य ने तांत्रिक साधना और सामाजिक आडंबरों का विरोध किया। नाथ साहित्य ने योग, हठयोग, और गुरु महिमा को स्थापित किया, और रासो साहित्य ने वीरता तथा प्रेम गाथाओं को जनमानस तक पहुंचाया। इन धाराओं ने न केवल हिंदी भाषा को आकार दिया बल्कि भारतीय संस्कृति और सामाजिक चेतना को भी समृद्ध किया, जिससे आधुनिक हिंदी साहित्य की नींव पड़ी।

## KEYWORDS:

जैन साहित्य, सिद्ध साहित्य, नाथ साहित्य, रासो साहित्य, भारतीय ज्ञान परंपरा.

सहस्त्रों वर्षों से चली आ रही इस महान भारतीय ज्ञान परंपरा में सहस्त्रों ऐसे माध्यम रहे, जिससे ज्ञान पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होता रहा। हिंदी साहित्य उनमें से भारतीय ज्ञान परंपरा का एक मुख्य माध्यम रहा। प्राचीन हिंदी साहित्य ने भारतीय ज्ञान परंपरा में अपने अनेक मूल साहित्य के माध्यम से एक विशालकाय भावना-स्तंभ-रूपी योगदान दिया। "जैन, सिद्ध, नाथ, रासो" ये हिंदी के वह मूल साहित्य हैं जिन्होंने इस वर्तमान के "अपने चरम सीमा पर अटखेलियाँ करते हुए हिंदी साहित्य" की नींव रखी।[1]

## जैन साहित्य:

"जैन" शब्द 'जिन' से बना है, जिसका अर्थ है 'विजेता'। जैन धर्म से जुड़ा "जैन साहित्य", जो जैन धर्म के अंतिम तथा 24वें तीर्थंकर महावीर के समय पांचवीं शताब्दी ईसा पूर्व में अस्तित्व में आया। इस साहित्य ने अपने धर्म गुरुओं तथा धर्म

प्रचारकों के उपदेशों, मतों तथा चिंतनों का प्रचार-प्रसार किया। जो मुख्य रूप से अनुशासन, अहिंसा के माध्यम से मुक्ति के मार्ग एवं आध्यात्मिक शुद्धता और आत्मज्ञान के मार्ग पर केंद्रित होने के साथ आत्म संयम, गुरु भक्ति, समानता तथा मानव कल्याण पर भी केंद्रित है।

## जैन साहित्य को दो प्रमुख श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है:

1. आगम साहित्य: भगवान महावीर के द्वारा दिए गए उपदेशों को उनके अनुयायियों द्वारा कई ग्रंथों में एकत्रित किया गया है। इन ग्रंथों को सामूहिक रूप से जैन धर्म के पवित्र ग्रंथ 'आगम' के रूप में जाना जाता है।
2. गैर-आगम साहित्य: इसमें आगम साहित्य और स्वतंत्र कार्यों की व्याख्या शामिल है, जो बड़े भिक्षुओं, ननों और विद्वानों द्वारा संकलित है।

इस साहित्य की भाषा प्राकृत, अपभ्रंश तथा अवहट्ट थी, जिसे प्रमुख साहित्यकार आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने पुरानी हिंदी (अपभ्रंश) कहा है। इस साहित्य की दो मुख्य धाराएं हैं: जहां एक ओर धार्मिक कर्मकांड तथा छुआछूत का विरोध किया गया है, वहीं दूसरी ओर साधकों के जीवन के प्रेरक प्रसंग तथा मुक्ति के मार्गों को वर्णित किया गया है। इस साहित्य के प्रवर्तक कवि स्वयंभू हैं, जो "अपभ्रंश के वाल्मीकि" कहे गए। इन्होंने श्रीराम के चरित्र को आधार बनाकर "पउमचरिऊ" नामक जैन रामायण की रचना की, जिसमें श्रीराम के चरित्र को सुंदर रूप में वर्णित किया गया है। प्रतिष्ठित हिंदी साहित्यकार डॉ. रामकुमार वर्मा के मत में स्वयंभू हिंदी के पहले कवि हैं। इस साहित्य ने हिंदी साहित्य को आधारशिला तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। हिंदी साहित्य का आदिकाल एवं उसका विकास जैन साहित्य के बिना अधूरा जान पड़ता है।

## सिद्ध साहित्य:

सिद्ध साहित्य बौद्ध धर्म के विकृत रूप वज्रयान से जुड़ा हुआ है। सिद्धों ने इस साहित्य को बौद्ध धर्म के तत्व वज्रयान के प्रचार-प्रसार के लिए लिखा था। यह साहित्य तंत्र-मंत्र, साधना, शैव भक्ति इत्यादि को सम्मिलित करती है। इस साहित्य में तंत्र साधना पर अधिक बल दिया गया। साधना पद्धति में शिव-शक्ति के युगल रूप की उपासना की जाती है। इसमें जाति प्रथा एवं वर्णभेद व्यवस्था का विरोध किया गया। इस साहित्य का आरंभ आठवीं सदी में हुआ। इस साहित्य में जैन साहित्य की तरह हमें धार्मिक आडंबरों, छुआछूत तथा यज्ञ का विरोध एवं गुरु भक्ति का समर्थन देखने को मिलता है। यहां हमें करुणा, दया, मानव कल्याण तथा उपकार का पुरजोर समर्थन देखने को मिलता है। सहज सिद्धों द्वारा 'संधा' या 'संध्या' भाषा में कहे गए उपदेशात्मक पद 'चर्यापद' कहलाते हैं।

'दोह कोश' सरहपा द्वारा रचित एक महत्वपूर्ण साहित्यिक रचना है, जो उनकी कविताओं और विचारों का संग्रह है। यह दोहे और अन्य छंदों में लिखा गया है, जिसमें रहस्यवादी, सहज ज्ञानवादी और आध्यात्मिक विषयों को शामिल किया गया है। सिद्धों ने इस साहित्य के 'पंच मकार' सिद्धांत के अनुसार "मांस, मत्स्य, मदिरा, मुद्रा तथा मैथुन" को मुक्ति का मार्ग बताया है, जिनका उपयोग तंत्र-मंत्र, साधना में होता है। सिद्धों द्वारा लिखे गए इस साहित्य के अनुसार मनुष्य इन पंच मकारों का भोग कर, एक समय के पश्चात इनमें अपनी रुचि समाप्त कर मुक्ति पा सकता है। इस साहित्य की रचना करने वाले सिद्धों की संख्या 84 है, जिनमें कुछ मुख्य सिद्ध सरहप्पा, शबरप्पा, लुइप्पा, डोम्भिप्पा, कुक्कुरिप्पा हैं। सिद्धों की भाषा में 'उलटबांसी' शैली का पूर्व रूप देखने को मिलता है। इनकी भाषा को संध्या भाषा कहा गया है। इन सिद्धों ने इस साहित्य की रचना अपभ्रंश तथा पुरानी हिंदी में की है। महान साहित्य इतिहासकार पंडित राहुल सांकृत्यायन ने सरहपा को प्रथम हिंदी कवि माना है और वहीं से सिद्ध साहित्य की शुरुआत को भी माना है। सिद्ध साहित्य ने हिंदी साहित्य की नींव तैयार की। इन सिद्धों ने कठिन भाषा का इस्तेमाल न करते हुए जनभाषा में लिखा। उलटबांसी की शुरुआत इस सिद्ध साहित्य से ही हुई थी, जिसका सीधा प्रभाव हमें कबीर पर एवं उनकी रचनाओं पर देखने को मिलता है।

## कबीर की रचना में उलटबांसी शैली उदाहरण:

**"धरती उलटि अकासै जाय, चिउंटी के मुख हस्ति समाय।"[2]**

इस उलटबांसी का अर्थ है कि जब व्यक्ति अपने अहंकार और वासना को त्याग देता है, तो वह ईश्वर के करीब पहुंच जाता है।

**"बिना पवन सो पर्वत उड़े, जीव जन्तु सब वृक्षा चढ़े।"3**

इस उलटबांसी का अर्थ है कि जब व्यक्ति का मन शांत और स्थिर हो जाता है, तो वह किसी भी बाधा से डरता नहीं है।

## नाथ साहित्य

नाथ साहित्य, सिद्ध साहित्य का विकसित रूप तथा तप, योग और आत्मज्ञान पर केंद्रित है; यहां शैव मत पर बल दिया गया है। इस साहित्य में योग और हठयोग की साधना पर जोर दिया गया है। सांसारिक मोह-माया से दूर रहने और वैराग्य की भावना को अपनाने पर बल दिया गया है। साहित्य में 'नाथ' शब्द का अर्थ 'मुक्ति देने वाला' है, यह मुक्ति सांसारिक भोग-विलास एवं आकर्षण से है। यहां गुरु को अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया है और गुरु की शरण में जाने की बात कही गई है। इसमें ब्रह्मचर्य और

शारीरिक शुचिता पर बल देकर हठयोग के द्वारा शरीर एवं मन को शुद्ध करके परमात्मा प्राप्ति की बात कही गई है। इस साहित्य में नाथों द्वारा नारी को मुक्ति के मार्ग में अवरोध बताया गया है। इस साहित्य के कवियों ने भी सिद्ध और जैन साहित्य के कवियों की तरह धार्मिक आडंबरों, मूर्ति पूजा का विरोध किया। इस साहित्य ने सर्वप्रथम गुरु को ईश्वर से भी उच्च दर्जा दिया। इस साहित्य का शुरुआती कालखंड 10वीं सदी है। मछंदर नाथ को नाथ संप्रदाय का संस्थापक योगी माना जाता है, यह नाथ योग परंपरा के प्रवर्तक भी हैं। इन्हें सिद्धों एवं नाथों के बीच का सेतु भी कहा जाता है। इस साहित्य के कवियों ने सिद्ध साहित्य के पंच मकार सिद्धांत का पुरजोर विरोध किया एवं सिद्ध साहित्य के असंतुलित बातों को संतुलित किया। महान साहित्य इतिहासकार राहुल सांकृत्यायन ने इस साहित्य को सिद्ध साहित्य का विकसित रूप कहा है। नाथ साहित्य में कुल नाथों की संख्या 9 बताई गई है, जिनमें कुछ मुख्य नाथ कवि हैं: गोरखनाथ, चौरंगीनाथ, मछंदरनाथ, चर्पटनाथ, जालंधरनाथ। इन कवियों ने इस साहित्य को अपभ्रंश, पुरानी हिंदी तथा जन भाषा में लिखा।

गोरखनाथ, नाथ साहित्य के प्रवर्तक कवि हैं, जिन्होंने साहित्य को जनभाषा में लाकर काफी प्रसिद्ध बनाया। इनकी रचनाएं गोरखवाणी या गोरख वचन हैं। गोरखवाणी के कुछ पंक्तियां:

**"गुरु बिनु ज्ञान न उपजे, गुरु बिनु मिले ना मोक्ष"4**

तात्पर्य है कि गुरु के बिना ज्ञान की वृद्धि नहीं हो सकती ना ही मुक्ति मिल सकती है।

नाथ साहित्य ने हिंदी साहित्य की नींव में, योग और भक्ति को जोड़ा। नाथ साहित्य ने ही संत काव्य परंपरा की शुरुआत की। डॉ. रामकुमार वर्मा के अनुसार **"**संपूर्ण संत साहित्य नाथ साहित्य पर ही अवलंबित है, नाथों के ही परंपरा का विकसित रूप संत काव्य धारा है"।

## रासो साहित्य

रासो साहित्य प्राचीन हिंदी के कालखंड की काव्यधारा है जो राजाओं के शौर्य एवं प्रेम को दर्शाती है। यह मुख्य रूप से राजाओं के आश्रय में रहने वाले कवियों, भाटों एवं चारणों द्वारा रचित होती थी। रासो साहित्य की उत्पत्ति के बारे में अनेक विद्वानों ने अपने-अपने अलग मत दिए हैं। फ्रांसीसी विद्वान गार्सा द तासी ने रासो शब्द की उत्पत्ति राजसूय यज्ञ से बताई है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार रासो शब्द की उत्पत्ति नरपति नाल्ह द्वारा रचित ग्रंथ बीसलदेव रासो में 'रसायण' नामक शब्द से हुई है।

रामस्वरूप चतुर्वेदी के मत में रासो शब्द की उत्पत्ति 'रस' शब्द से हुई है। वहीं हजारी प्रसाद द्विवेदी ने रासो शब्द की उत्पत्ति (प्रकृति के विकास के दौरान) 'रासक' शब्द से बताई है। इस साहित्य का कालखंड 11वीं सदी से शुरू होता है। यह अपभ्रंश तथा पुरानी हिंदी में लिखी गई थी।

**इस साहित्य का वर्गीकरण मुख्यतः दो भागों में किया गया है:**

**वीर प्रधान:**

रासो साहित्य की सबसे मुख्य और पुरानी धारा जिसमें राजाओं के शौर्य, वीरता, बलिदान, पराक्रम एवं साहस का वर्णन होता है। यह डिंगल शैली में लिखा जाता है। हिंदी के पहले महाकवि चंदबरदाई द्वारा रचित पृथ्वीराज रासो, जिसमें सम्राट पृथ्वीराज चौहान के जन्म, जीवन, शासन, विवाह, प्रेम, पराक्रम एवं मृत्यु तक का वर्णन है।

**श्रृंगार प्रधान:**

रासो साहित्य की मुख्य धारा है जो प्रेम, आनंद और सौंदर्य के भाव को व्यक्त करता है। इसे रसराज भी कहा जाता है। श्रृंगार रस के दो मुख्य भेद हैं: संयोग श्रृंगार और वियोग श्रृंगार। संयोग श्रृंगार में नायक-नायिका के मिलन का वर्णन होता है, जबकि वियोग श्रृंगार में नायक-नायिका के बिछड़ने और विरह का वर्णन किया जाता है। रासो कवियों ने श्रृंगार वर्णन के लिए पिंगल भाषा का प्रयोग किया है।

**अन्य धारा उपदेश एवं लोककथात्मक प्रधान:**

तात्पर्य है कि उस समय के संतों द्वारा दिए गए उपदेशों तथा लोक कथाओं का वर्णन किया जाना। रासो साहित्य ने हिंदी साहित्य में वीर रस को प्रधान बनाने के साथ-साथ श्रृंगार रस को भी प्रतिष्ठित किया। रासो साहित्य के वीर रस काव्यधारा हमें हिंदी के रीतिकाल एवं आधुनिक काल के कवियों में देखने को मिलती है। रीतिकाल में महाकवि भूषण ने लिखा:

**इंद्र जिम जंभ पर बाड़व ज्यौं अंभ पर रावन सदंभ पर रघुकुलराज है।**
**पौन बारिबाह पर संभु रतिनाह पर ज्यौं सहस्रबाहु पर राम द्विजराज है।**
**दावा द्रुमदंड पर चीता मृगझुँड पर भूषन बितुंड पर जैसे मृगराज है।**
**तेज तम-अंस पर कान्ह जिम कंस पर यौं मलेच्छ-बंस पर सेर सिवराज है॥5**

आधुनिक काल में सुभद्रा कुमारी चौहान की रचना:

**चमक उठी सन् सत्तावन में वह तलवार पुरानी थी,**

**बुंदेले हरबोलों के मुंह हमने सुनी कहानी थी,**
**खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी।6**

## निष्कर्ष

हिंदी साहित्य की प्राचीन नींव जिन मूल धाराओं पर टिकी है, उनमें जैन, सिद्ध, नाथ और रासो साहित्य का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण और आधारभूत रहा है। इन साहित्यिक धाराओं ने न केवल हिंदी भाषा के विकास की दिशा तय की, बल्कि भारतीय ज्ञान परंपरा, सामाजिक चेतना, धर्म, योग, भक्ति, वीरता, और सौंदर्यबोध को भी गहराई से अभिव्यक्त किया। जैन साहित्य ने अनुशासन, आत्मसंयम, और अहिंसा जैसे मूल्यों के माध्यम से साहित्य को धर्म और नैतिकता की दिशा दी। सिद्ध साहित्य ने उलटबांसी की शैली में समाज-सुधार, तंत्र-साधना और वर्ण व्यवस्था के विरोध के साथ भाषा को जनमानस से जोड़ा। नाथ साहित्य ने योग, हठयोग और गुरु महिमा को केंद्र में रखकर आत्मज्ञान और तप की परंपरा को साहित्य में स्थान दिया। वहीं रासो साहित्य ने वीर रस और श्रृंगार रस के माध्यम से राजाओं की शौर्यगाथा और प्रेम कथाओं को जनसामान्य तक पहुँचाया। इन धाराओं ने न केवल हिंदी साहित्य को विविधता प्रदान की बल्कि भाषाई विकास, सामाजिक विमर्श और सांस्कृतिक चेतना को भी सुदृढ़ किया। इनकी लेखन शैली, भाव, और भाषा ने आधुनिक हिंदी साहित्य की आधारशिला रखी।

## Reference:

1. डॉ. एस. के. शर्मा, हिंदी साहित्य, पृष्ठ सं. 11
2. Read - कबीर की उलटबांसियां - कबीर की उलटबांसियां - Version 2 - December
3. वही
4. वही
5. रोहित मांगलिक, हिंदी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ सं. 23
6. S.R. Ramaswamy, A Passage Through India, page-122

**Funding:**
This study was not funded by any grant.

**Conflict of interest:**

The Authors have no conflict of interest to declare that they are relevant to the content of this article.

**About the License:**

© The Authors 2024. The text of this article is open access and licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.